सत्य एँव अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल।

जनवरी-फरवरी,२००२

सच्ची प्रार्थना

क्या हम परमेश्वर की ओर भाग रहे हैं या दूर?

एज्रा(५:१-१७, ६:१-३)

'और उन्होंने हमें इस प्रकार उत्तर दिया, 'हम तो स्वर्ग और धरती के परमेश्वर के दास हैं, और उसी मन्दिर का पुनःनिर्माण कर रहे हैं जो वर्षों पूर्व बनाया गया था। उसे इस्राएल के एक महान् राजा ने बनवाकर तैयार किया था। परन्तु जब हमारे पूर्वजों ने स्वर्ग के परमेश्वर को क्रोध दिलाया तो उसने उनको बेबीलोन के कसदी राजा नबूकदनेस्सर के अधिकार में कर दिया, जिसने इस भवन को नष्ट कर दिया और जो लोगों को निर्वासित करके बेबीलोन ले गया।'
एज्रा(५:११-१२)

जो लोग परमेश्वर का मंदिर बनाने जा रहे थे, उन्होंने अपनी गलती को स्वीकारा था। जब हम अपने दुश्मन से मिलने जाएँ, यह अच्छा है कि हम अपनी गलती को स्वीकार करें। एक ग्लानि की भावना जो हमारी चेतना और हमारी विचारधारा के हर भाग में बैठ जाती है, वह हमारे लिए अच्छी है। इन लोगों ने यह स्वीकारा कि उनके पूर्वजों ने परमेश्वर को भड़काया है। हमें अपने माता-पिता के पापों को स्वीकारना चाहिए। कभी-कभी हमें अपने बच्चों के पापों को स्वीकारना चाहिए और उनके लिए प्रार्थना करनी चाहिए। परमेश्वर ऐसी प्रार्थना स्वीकार करता है।

विलापगीत(२:१४)' तेरे नबियों ने तेरे लिए मिथ्या और मूर्खतापूर्ण दर्शन देखे हैं, तेरा अधर्म उन्होंने प्रकट नहीं किया, नहीं तो तू बंधुवाई में न जाती। परन्तु उन्होंने तेरे लिए झूठी और भ्रामक नबूवतें की हैं।'
भरमाने वाले नबी यरूशलेम के नाश के मुख्य कारण थे। हनानी ने शांति की झूठी भविष्यवाणी की थी। यिर्मयाह ने आंसू बहाए और आंसू नदी की भाँति बहे क्योंकि उसके लोगों की पुत्रियाँ नाश हुई। सच्चा नबी कैद कर दिया था और झूठी भविष्यवाणी उस राज्य में उत्पत्ति(१६ अध्याय) 'अब्राम मिस्र गया और वापसी में उसका एक भाग अपने साथ लेता आया।.....'

जहाँ कहीं भी हम जाएँ वहाँ से अपने साथ कुछ लेते आते हैं। सारै(अब्राम की पत्नी) के घर में एक मिस्री स्त्री१ सारै में विश्वास का अभाव था। हागर ने जैसे ही गर्भधारण किया, वह घमंडी हो गई और सारै की उपेक्षा करने लगी। सारै जो गृहस्वामिनी थी बोली, ' यह क्या है? घर में गड़बड़ है।' सारै ने उसके साथ कड़ाई से बर्ताव किया। यह दासी भाग खड़ी हुई क्योंकि वह कोई अनुशासन या डाँट नहीं चाहती थी। ऐसा लगता है कि बहुत से लोग इस मार्ग को अपनाते हैं। कई लोग परमेश्वर के सम्मुख समर्पण करने की अपेक्षा, उससे दूर भागते है। यह स्त्री निर्जन स्थान पर भाग खड़ी हुई।

उत्पत्ति(१६: ८) ' तू कहाँ से आ रही है और कहाँ जा रही है? ' अपराधी विवेक (अंतःकरण) हमसे प्रश्न करता है, ' तुम कहाँ से आ रहे हो? ' हममें से कुछ यह बताने में डरते हैं कि हम कहाँ से आ रहे हैं। स्वर्गदूत यह जानता था, परन्तु ऐसा प्रतीत होता था कि यह स्त्री नहीं जानती थी। परमेश्वर हमसे यह प्रश्न करना चाहते हैं,' तुम कहाँ से आ रहे हो? ' बीते वर्ष में तुम्हारी आत्मिक प्रगति कैसी रही? तुम्हारी शुरुआत क्या है? जिस मार्ग पर तुम चले हो, उसकी जाँच करो। हम अनन्त समय में अपने पदचिह्न छोड़ रहे हैं। उनमें से कुछ अर्थहीन हैं, कुछ मूर्खतापूर्ण, कुछ पीछे हटने वाले के पद चिह्न। आओ१ बीते साल के पदचिह्नों की जाँच करें। हम किस मार्ग में चले' परमेश्वर के ऊँचे स्थानों में? क्या हम परमेश्वर की सन्निधि के उच्च स्तर में रहे हैं? यह स्त्री अब्राम के घर से इस निर्जन स्थान में भाग आई। कई लोग इस प्रकार के कदम उठाते हैं। परमेश्वर की उपस्थिति, आंनद और शांति को छोड़, वे अपने हठ और दुर्गति की और दौड़ते हैं। यह अतिआवश्यक है कि हम स्वंय से यह प्रश्न करें कि हम कहाँ से आ रहे हैं। तुम्हारा मार्ग या तो प्रगति या पतन का मार्ग है। तुम एक स्थान पर स्थिर नहीं रह सकते।

पहाड़ों में, एक यात्री बस ऊपर चढ़ने की चेष्टा कर रही है और दूसरी नीचे उतर रही है। क्या तुम सरल मार्ग चुन रहे हो? जब मैं ऊँचाई पर पहुँचना चाहता हूँ तो प्रतिरोध देखता हूँ। तुम में से कुछ सरल मार्ग चुने हुए हैं। वह तो पीछे हटने वाले का मार्ग है- जो पतन के मार्ग पर है। तुम्हें परमेश्वर को ज़रूर बताने चाहिए कि तुम कहाँ से आ रहे हो। तुम एक आराम-पसंद व्यक्ति बन गए हो जो कहता है,' इसमें क्या बुराई यदि मैं ऐसा करूँ? हरेक ऐसा कर रहा है।' यदि तुम इस प्रकार तुलना कर रहे हो तो तुम मुक्ति पाए हुए व्यक्ति नहीं हो।

' दूसरा प्रश्न ' 'तुम कहाँ जा रहे हो? ' हमें स्वंय से यह प्रश्न पूछना चाहिए। तुम परमेश्वर की उपस्थिति से दूर भाग रहे हो, लेकिन कहाँ जा रहे हो? अब्राम के घर की सुरक्षा को त्याग कर तुम निर्जन स्थान में आ गए हो, । तुम कहाँ जा रहे हो? क्या हम परमेश्वर के निकट जा रहे हैं या उससे दूर हट रहे हैं? क्या मैं पवित्रता के मार्ग पर चल रहा हूँ? भजन संहिता में एक विनीत पुकार है, भजन संहिता(१०२:२४),' मैंने कहा,' हे मेरे परमेश्वर, मुझे अल्पायु में ही न उठा ले, तेरे वर्ष तो पीढ़ी दर पीढ़ी तक बने रहते हैं।' यह कैसी विनीत पुकार है। लेकिन जब भजन लिखने वाला दीर्घ आयु की कामना करता है तो उसके पीछे महान उद्देश्य और अभिप्राय है। भजन(७१:१८),' मेरे बुढ़ापे में भी जब मेरे बाल पक जाएँ, हे परमेश्वर, मुझे त्याग न दे, जब तक मैं इस पीढ़ी से तेरे सामर्थ्य का और सब भावी पीढ़ियों से तेरी शक्ति का वर्णन न कर दूँ।' यहाँ भजन लिखने वाले के जीवन में प्रयोजन है। दूसरा कारण, भावी पीढ़ी के सामने परमेश्वर की सामर्थ्य का वर्णन करना है। निःसंदेह परमेश्वर ने दाऊद(इस्राइल का एक राजा) की ७१ भजन में की प्रार्थना का उत्तर दिया। आज भी हम दाऊद के विषय में सोचते हैं और परमेश्वर के लिए किए गए वीरता पूर्ण कार्य। उसका लिखा भजन ५१, उसके पश्चात्ताप और पाप का अंगीकार करना, अनेक लोगों के लिए मार्ग दर्शन है। कई माता-पिता कहते हैं, 'क्योंकि मेरे बच्चे छोटे हैं, मुझे ज़रूर जीवित रहना है।' यह माननीय कारण है, परन्तु आओ और ऊँचा उठें।

मृत्युंजय ख्रिस्त
ON LINE
By Email:
lefipost@mailandnews.com
At our Web Site:
http://lefi.org

अपने परिवार को मसीह के लिए कैसे जीतें।

पुराना नियम एँव नया नियम (बाईबल के दो भाग) इस सत्य का अनुभव करवाते हैं कि परमेश्वर विश्वासी के समस्त परिवार का उद्धार करने में सक्षम है। तब यहोवा ने नूह से कहा,' तू अपने समस्त घराने सहित जहाज़ में प्रवेश कर, क्योंकि इस पीढ़ी में तू ही मुझे धर्मी दिखाई देता है।' उत्पत्ति(७:१) फसह की रात्रि के पहले, परमेश्वर ने यह नियम दिया,' एक घर के लिए एक मेमना', निर्गमन(१२:३) राहाब ने, जिसका नाम परमेश्वर के विश्वासी जनों की सूची में अंकित है, इब्रानियों ११, यरीहो के नाश के समय अपने समस्त घराने की सुरक्षा के लिए विश्वास किया था। उसकी विनती सुनी गई। वह और उसका घराना बचाए गए। यहोशू (२:१२-२१, ६:२५)

पौलुस और सीलास ने फिलिप्पी दरोगा से कहा,' प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास ला, तो तेरा और तेरे घराने का उद्धार होगा। प्रेरितों के कार्य (१६:३१) कुरनिलियुस को यह प्रतिज्ञा मिली की सीमियों पतरस,' वह वचन कहेगा जिसके द्वारा तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा। प्रेरितों के कार्य(११:१४)।

बाईबल के कितने और वचन हैं जो इस बात की आशा दिलाते हैं कि परमेश्वर परिवार के सभी जनों को सुरक्षा(उद्धार) के जहाज़ में लाना चाहते हैं। नीतिवचन(११:२१) प्रेरित पौलुस हमें यह याद दिलाता है कि प्रभु,' इसका इच्छुक नहीं की कोई भी नाश हो परन्तु यह कि सभी पश्चाताप करें।' २ पतरस(३:९) वह तुम्हारे साथी को बचाना चाहता है, तुम्हारे माता-पिता, तुम्हारे बच्चों और तुम्हारे घराने के लोगों को। और यह भावविह्यल करने वाला आश्चर्य कर्म वह तुम्हारे द्वारा करना चाहता है।

'मेरा सारा परिवार बचाया जाएगा? ' तुम गहरी सांस लेते हो,'यह तो असंभव जान पड़ता है।' परन्तु यीशु कहते हैं,' परमेश्वर के द्वारा सबकुछ संभव है।' मरकुस(१०:२७) यदि तुम परमेश्वर के साथ हो और परमेश्वर तुम्हारे साथ, तो कुछ भी असंभव नहीं। जब मारथा को यह समझने में परेशानी हो रही थी कि प्रभु कैसे उसके मरे हुए भाई, लाज़र, को दुबारा जीवित करेंगें। यीशु ने कहा,'यदि तू विश्वास करे, तो तू परमेश्वर की महिमा देखेगी। युहन्ना(११:४०)।

धर्मी पुरूषों और स्त्रियों ने युगों से अपने परिवार का मसीह के लिए दावा किया है और परमेश्वर ने उनके विश्वास का आदर किया। सालवेशन आर्मी की कैथरीन बूथ पुकार कर कहती है,'हे परमेश्वर मैं तेरे
सम्मुख अपने परिवार के बिना नहीं खड़ी होऊँगीं।' उसका सारा परिवार प्रभु यीशु को जान सका और विश्वासी बनकर प्रभु की सेवा की।

तुम्हारा पति जीता जा सकता है।

कैलिफोर्निया राज्य की श्रीमति जः यह जानती है कि एक पति भी यीशु के लिए जीता जा सकता है। इसे पाने में २४ साल की प्रार्थनाएँ, कठिनाईयाँ और सच्चा व्यक्तिगत मसीह जीवन लगा। उनका पति आज एक प्रसन्न व्यापारी मसीह है। यह पत्र है जो उसने लिखा ,

मेरे पति के उद्धार को पाने में २४ साल लगे। यह एक लम्बा, कंटीला मार्ग था जिस पर मैं चली लेकिन मैंने कभी साहस नहीं छोड़ा। जब भी मार्ग में अंधेरा छाया, मैं अपने को यह कहती,' देखो, चाहे मेरा पति कभी उद्धार न पाए, मैं फिर भी अपना भाग परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा निभाऊँगी।'

प्रत्येक दिन मैंने यीशु को प्रसन्न करने का प्रयत्न किया। कई बार मुझे कठिनाईयों के बीच से गुजरना पड़ा। मैं कई बार मृत्यु के द्वार तक पहुँची। मेरे बच्चे अक्सर गंभीर बिमारियों के शिकार हुए। मुझे अब भी याद है, जिन दिनों देश की अर्थव्यवस्था बिगड़ी हुई थी और हमारे पास दस पैसे(दस सैंट) भी नहीं थे कि कुछ भोजन खरीद सकें। बिजली कम्पनी ने हमारी बिजली लाइन काट दी थी। मैं अपने हाथों से चार बच्चों के कपड़े धोती थी। जब भी हमारे पास कुछ रूपये(डालर, अमरीकी मुद्रा) होते, तो मेरा पति उसे शराब पीने में उड़ा देता। ऐसे निराशा के समय में, मैं परमेश्वर से प्रार्थना करती और उससे अपने नन्हें बच्चों के लिए भोजन माँगती। और परमेश्वर मेरी प्रार्थना सुनते। हम कभी भुखमरी में नहीं रहे। यह सत्य है, मेरे बच्चे इस बात को नहीं समझ पाते की माँ भोजन कहाँ से लाई। यह मेरे और प्रभु के बीच गोपनीय था। मेरा पति व्यवहार कुशल स्वीडन वासी था। उसे ज्ञान था कि उसे मसीह का बन जाना चाहिए। उसने मुझे बताया था कि जब मेरा हृदय परिवर्तन हुआ, तो मसीह ने मेरा जीवन पूर्णतः बदल दिया था। वह इस बात को स्वीकार करता था कि परमेश्वर ने हमारे परिवार के लिए अनेक अश्चर्यकर्म किये हैं। लेकिन वह एक मसीह पिता बनने की कीमत नहीं चुकाना चाहता था।

ऐसा लगता था जैसे वह चक्कर काट रहा हो। कई बार वह धर्म के बारे में कोई चर्चा नहीं करना चाहता और कई बार सत्य को जानने का भूखा होता। जब वह सत्य जानने का भूखा होता तो मैं उसे मसीह के बारे में साक्षी देती। कई बार वह प्रभु का जिक्र भी करने पर आग बबूला हो जाता। लेकिन जब मैं उससे परमेश्वर के बारे में बात नहीं कर पाती तो परमेश्वर से उसके बारे में बात करती। वह मुझे उसके लिए प्रार्थना करने से रोक नहीं पाया।

काफी समय बीतने से पहले ही मुझे इस बात का ज्ञान हो गया कि मेरा पति मेरी ओर वैवाहिक संबंध में वफादार नहीं है और उसने विवाह की प्रतिज्ञाओं को तोड़ा था। यह सत्य है कि उसने यह सत्य मुझ से छिपाने का प्रयत्न किया। लेकिन एक दिन, जब मैं प्रार्थना कर रही थी, ऐसा लगा कि परमेश्वर मुझे दिखा रहे हैं कि मेरा पति कहाँ है और किस के साथ उसका नाजायज़ संबंध है। मेरा दिल टूट गया। सहजता से मेरे पति ने सारे विषय को झुठला दिया। लेकिन बाद में मुझे पता लगा कि परमेश्वर मे मुझे इस कठोर सत्य का भान करवा दिया था। मेरा पति विश्वासघाती था।

इन काली घड़ियों में परमेश्वर ने मुझे मसीह स्वभाव बनाए रखने की सामर्थ दी। मैंने कोशिश की कि उसको परेशान न करूँ। जब कभी वह चिड़चिड़े स्वभाव में होता तो मुझ पर ताने कसता, मैं चुप रहती। हर दिन मैंने प्रभु से धीरज, निकटता, सहनशीलता का भण्डार पाया। जब मैंने प्रभु को नहीं जाना था, तब मुझ में ऐसे गुण नहीं थे। शायद मुझ में अत्याधिक आयरिश स्वभाव था। मेरे हृदय परिवर्तन के पहले, मैं हठीली, चिड़चिड़ी और ढीठ थी। लेकिन फिर, मैंने यीशु को अपने जीवन की बागडोर सौंप दी। और उन्होंने मुझे बिलकुल बदल दिया। बल्कि दूसरे मसीह मुझे कहते कि मैं बहुत सरल व्यक्ति हूँ, मुझे अपना बचाव स्वंय करना चाहिए। लेकिन परमेश्वर ने मुझे मीठे स्वभाव का बने रहने को कहा और मैंने प्रभु को ही मेरा बचाव करने दिया।

१९५० में, हमारा घर और व्यापार गंभीर पैसे की परेशानी में था। मैं बहक कर अपने जीवन साथी को यह करने वाली थी कि अब से वह अपने लिए प्रार्थना स्वंय करे। मुझे इस बात का ज्ञान था कि वह मेरी प्रार्थनाओं के द्वारा कुछ हद तक सुरक्षित महसूस करता था। लेकिन जैसे किसी ने कहा है,' रात्रि की सबसे काली घड़ी, सवेरे की घड़ी से पहले वाली होती है।' २४ साल के आंसू, सिरदर्द, प्रार्थनाएं और कोशिश के बाद, मैंने अपने पति को संजीवन सभा में वेदी पर प्रभु के सामने समर्पण के लिए जाते देखा। मेरा बहका हुआ पति आखिरकार परमेश्वर के पास पहुँचा। मैं खुशी से झूम उठी।

आज, कई साल बाद, मेरा पति प्रभु की सेवा कर रहा है। हमारा एक मसीह परिवार है, हम चर्च इक्ठ्ठे जाते हैं और एक सफल व्यापार कर रहे हैं।

यदि परमेश्वर हमारे घर में चमत्कार कर सकता है तो किसी भी घर में कर सकता है। प्रभु की सहायता द्वारा मैं जानती हूँ कि एक स्त्री अपने पति को मसीह के लिए जीत सकती है।

तुम्हारी पत्नी भी जीती जा सकती है।

कुछ साल पहले पूर्वी अमरीकी राज्य में एक जानामाना कारखाने का मालिक मसीह बन गया। उसने फिर अपनी सुन्दर काले बालों वाली गोरी पत्नी को प्रभु के लिए जीतने की ठानी।

यह सरल नहीं था। 'चर्च, चर्च, चर्च१ क्या तुम कहीं ओर नहीं जा सकते? ' उसने परेशान होते हुए

कहा। ' ऐसा लगता है कि तुम परमेश्वर के अवाला कुछ और नहीं सोच सकते।'

उसने अपने पति तो त्यागने की धमकी दी। लेकिन उसके पति ने सलाह दी,' आओ, कैलिफोर्निया राज्य में छुट्टी बिताने चलें। प्रिय मुझे विश्वास है कि हम अपनी समस्या सुलझा सकते हैं।'

वातावरण के बदलाव ने कोई सहायता नहीं की। 'तुम चाहे कुछ भी विश्वास करो, मैं व्यक्तिगत तौर पर विश्वास नहीं करती की परमेश्वर है।' वह धृष्टता से बोली। अपनी पत्नी के ऐसे बर्ताव को देख टूटे हुए मन से इस कारखाने के मालिक ने गिड़गिड़ा कर प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा उसे ज्ञान कराए कि वह पापी है और प्रभु के निकट लाए। जल्द ही प्रार्थना का उत्तर मिला। एक रात, कैलिफार्निया के समुद्र के किनारे गाड़ी में, उसकी पत्नी उसके नज़दीक खिसकते हुए फुसफुसाई। ' प्रिय, मैंने जो कुछ परमेश्वर के बारे में कहा, मैं सचमुच वैसा नहीं सोचती। मैं सचमुच में उनमें विश्वास करती हूँ और मैं भी उन्हें अपनी जीवन सौंपना चाहती हूँ।

' परमेश्वर धन्य है१' पति मुस्कराया। ' उसने मेरी प्रार्थना का उत्तर दिया।'

उस रात लगभग ११ बजे उन्हें एक छोटी सी चर्च खुली हुई मिली। उन्होंने अन्दर प्रवेश किया, वेदी पर गए और जल्द ही उसकी पत्नी का हृदय भी उद्धार के आनन्द से भर गया।

आज यह मसीह, कारखाने का मालिक, पाँच बच्चों का पिता है और बड़ी खुशी से यह आपको बताएगा कि ' हाँ, पति अपनी पत्नी को मसीह के लिए जीत सकता है। परमेश्वर अब भी प्रार्थना का उत्तर देता है।'

तुम्हारे माता-पिता भी जीते जा सकते हैं।

एक नन्ही लड़की ने अपने नास्तिक पिता से गिड़गिड़ा कर विनती का। 'कृपया, आप मेरे साथ चर्च आओ, केवल एक बार। पिताजी, मैं आपसे प्यार करती हूँ। क्या आप नही आओगे? '

आखिरकार उसने कहा,' ठीक है प्रिय, केवल एक बार।' उसकी बेटी आनन्द से भर गई। वह यीशु से प्यार करती थी और उसे अब यह आशा थी कि उसके पिता एक उपदेश को सुनेगें और वह उन्हें भी प्रभु से प्यार करने को आकर्षित करेगा।

लेकिन वह बेहद निराश हुई, उनके पादरी ने पुराने नियम का वह भाग पढ़ा जो कि लम्बे कठिन नामों से भरा था। लगभग हर आयत कहती थी,' उसने उसको जन्म दिया और उसने उसको और फिर वह मर गया।' 'ओह, पिताजी फिर कभी चर्च नहीं आना चाहेंगें।' उसने सिसकते हुए अपनी माँ से कहा।

लेकिन वह गलत थी। परमेश्वर ने उस वाक्यांश 'और वह मर गया' का उपयोग किया, जिसके द्वारा उसके पिता को उनका पाप दिखाया और उन्हें बदल दिया। उसने बाद में साक्षी दी कि वह तीन शब्द कई दिनों तक उसे विचारों में कौंधते रहे। उसने समझा कि किसी दिन वह भी परमेश्वर मे मिलने की तैयारी के बिना मर जाएगा। आखिरकार उसने परमेश्वर से शांति संबंध स्थापित करने का निर्णय लिया। उसकी नन्हीं बेटी उसे मसीह के पास लाई। लिडिया एचः सिगोरनी कहती है,'हम अपने बच्चों की शिक्षा की बात करते हैं। क्या हम यह जानते हैं कि हमारे बच्चे भी हमें सिखाते हैं? ' हाँ, बच्चे भी अपने माता-पिता को मसीह के लिए जीत सकते हैं।

- चुना गया, लेखक नथानिएल ओलसन, 'अपने परिवार को मसीह के लिए कैसे जीतें।'

क्या हम परमेश्वर से.....
.... पृष्ठ संख्या १ से

उत्पत्ति(१६:१३), इस अवर धर्मी स्त्री ने, जो मूर्तिपूजक स्थान से आई थी, परमेश्वर को एक नाम दिया,' तू देखने वाला परमेश्वर।' वह घमंडी स्त्री थी जो आज्ञापालन नहीं करना चाहती थी। परमेश्वर की दृष्टि हमारे घमंड की ओर है, कैसे हम अपने को नम्र नहीं करना चाहते। शैतान भी देख रहा है। जब तुम्हारे हृदय में घमंड है और तुम परमेश्वर के सम्मुख समर्पण नहीं करना चाहते, वह आक्रमण करने के लिए ऐसे अवसर की ताक में है। लंबी प्रार्थनाएँ, आज्ञापालन का स्थान नहीं ले सकतीं। शैतान तुम्हें गड़बड़ी में डालने की ताक में है। यह मूर्ख स्त्री दूर भागने की कोशिश में थी। परमेश्वर ने चेतावनी देने के लिए अपने स्वर्गदूत को भेजा,' जा सारै की आज्ञा मान।' उसने कहा,' हे परमेश्वर, तू मुझे देखता है।'

मुझे इस बात का बहुत दुख होता है जब मैं कुछ लोगों के उद्देश्य को नहीं जान पाता, कुछ लोगों को भाँप नहीं पाता। साधारण तय लोग मुझे धोखा नहीं देते। लेकिन कुछ ऐसे लोग हैं जो सच्चाई को मुझसे छिपाना चाहते हैं। यह, मेरे लिए, भयंकर बात है।

तुम ऐसा व्यवहार परमेश्वर से कर रहे हो जो देखता है। परमेश्वर के साथ खिलवाड़ मत करो। यदि तुम अपने घमंड के अनुसार ही चलना चाहते हो और विद्रोही बन गए हो, तो परमेश्वर इसके अनुसार तुमसे व्यवहार करेगा। हम परमेश्वर की इच्छा को विफल नहीं कर सकते। हमारा ऐसा परमेश्वर है जो हमें जाँचता है। आओ हम नववर्ष में परमेश्वर का पवित्र भय मानते हुए और काँपते हुए, पश्चात्ताप के द्वारा प्रवेश करें।

- जोशुआ दानियल।

परमेश्वर की सामर्थ्य

एक गुरूकुल मिशन कक्षा में, हबर्ट जैकसन ने बताया कि कैसे एक नए मिश्नरी आने के नाते, उसे एक ऐसी कार मिली जो बिना धक्के के चालू नहीं होती थी।

अपनी समस्या पर विचार करने के बाद उसने एक योजना बनाई। वह स्कूल के निकट अपने घर पर गया, उसने स्कूल से कुछ विधार्थी ले जाने की अनुमति ली। और उनसे कार को धक्का लगाने की सहायता माँगी। जब वह अपना चक्कर लगा कर वापस आता, तो वह उस कार को या तो ढलान के ऊपर खड़ी कर देता या उसे चालू रखता। उसने यह अपना बनाया तरीका दो साल तक जारी रखा।

खराब सेहत के कारण जैकसन परिवार को जाना पड़ा, और उसने एक नए मिश्नरी को कार के बारे में बताना आरंभ किया, तो नए व्यक्ति ने गाड़ी के बोनट के नीचे झांक कर जांच की। इससे पहले कि व्याख्या पूरी होती, नए मिश्नरी ने टोकते हुए कहा, 'क्यों डा० जैकसन, मैं सोचता हूँ कि समस्या तो केवल यह ढीली तार है।'

उसने तार को घुमाया और कस दिया, कार में बैठा, बटन दबाते ही, जैकसन को अश्चर्य हुआ, और कार चालू हो गई।

दो साल तक यह बेकार की समस्या एक रोज का काम बन गई थी। गाड़ी की शक्ति तो हमेंशा उपस्थित थी। केवल ढीला तार ही था जिस कारण जैकसन उस शक्ति का उपयोग न कर सका। जै० बी० फिलिप्स, वचन को ऐसे लिखता है, इफिसीयों (१:१९-२०) 'जो परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं उन्हें कैसी महान शक्ति उपलब्ध है।' जब हम परमेश्वर के साथ अपना संबंध पक्का रखते हैं, उसका जीवन और सामर्थ्य हमारे अन्दर प्रवाह करता है।

-चुना गया।

सत्य की परख!

'जब धर्मी लोग ऊँचा पद पाते हैं तो लोगों में हर्ष छा जाता है, परन्तु जब एक दुष्ट मनुष्य शासन करता है तो लोग कराह उठते हैं।'नीतिवचन (२९:२)

पृष्ठ संख्या ३

स्वर्ण - एक अयोग्य जीवन रक्षक।

आज कितने ही लोग स्वर्ण की पूजा कर रहे हैं। जहाँ युद्ध ने हजारों की जान ली, सोने ने लाखों की। सभी युगों में उसका इतिहास एक गुलामी और दमन का इतिहास है। इस समय, उसका कैसा साम्राज्य है। लालच की आत्मा इस धरती को सोने में बदलने की चाहत रखती है।

तारपिया(एक राजकुमारी), रोम के केपिटोलिन हिल के किले के राज्यपाल की बेटी, सेबियन सैनिकों के सोने के कलाई-बंधों पर मोहित हो गई और तैयार हो गई कि यदि वे अपने बाएँ हाथ में बंधे मणिबंध उसे दे देंगे तो वह उन्हें किले में प्रवेश करने देगी। यह समझौता तैयार हो गया। सैबियनों ने अपनी प्रतिज्ञा का पालन किया। टेटियस, उनका सेनापति, उनमें सबसे पहला व्यक्ति था जिसने अपना कलाई-बंध और ढाल सौंप दी। लोभ का खजाना हर सैनिक ने तारपिया के उपर फेंका जब तक वह उस सोने के बोझ के तले दब कर मर न गई। इसी प्रकार सोने ने कई लोगों को अपने बोझ तले डुबोया है।

सोने के रद्दीपन, जिसकी चाह में कितने ही लगे हैं, डा० आरनेट, स्काटलैण्ड का डाक्टर, एक कहानी में ऐसे व्याख्या किया करते थे।

एक समुद्री जहाज़, उत्प्रवासी समूह को लिए अपने मार्ग से भटक गया और एक सूखे टापू से टकराकर टूट गया, जो कि लोगों की पहुँच से दूर था। वहाँ से बच निकलने का कोई साधन नहीं था लेकिन उनके पास काफी मात्रा में खाद्य सामग्री थी। सागर नें उन्हें घेरा हुआ था, लेकिन उनके पास काफी मात्रा में बीज थे, अच्छी उपजाऊ भूमि और सूर्यरोशनी, इस कारण कोई खतरा नहीं था। इससे पहले कि योजना बनती, एक खोजी पार्टी को सोने की खान मिल गई। सारा समूह उसकी खुदाई के लिए निकल पड़ा। दिन-प्रतिदिन और महीने के बाद महीने, वे मेहनत करते रहे। उन्हें सोने के ऊँचे-ऊँचे ढेर मिलते रहे। लेकिन वसंत ऋतु निकल गई, और एक भी धरती का टुकड़ा तैयार नहीं किया गया, बीज का एक दाना भी नहीं बोया गया। ग्रीष्म ऋतु आ गई और उनकी संपत्ति बढ़ गई लेकिन उनके भोजन के भण्डार कम होते गए। पतझड़ में उन्होंने पाया कि उनके सोने के ढेर व्यर्थ हैं। अकाल, उनके सामने मुँह बाए खड़ा था। वे जंगल की तरफ निकले, पेड़ों को काटा, जड़ों को खोद निकाला, भूमि की जुताई की और बीज बोए। लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। सर्द ऋतु आ गई और उनके बीज धरती में सड़ गए। वे
अकाल में अपने खजाने के बीच मर गए।

धरती एक द्वीप की भाँति है और अनन्तकाल उसके चारों ओर एक महासागर। हम उस द्वीप के छोर पर हैं। एक जीवित बीज हमें मिला है, लेकिन सोने की खान हमें आकर्षित करती है। हम वहाँ वसंत और ग्रीष्म काल बिताते हैं, सर्द ऋतु हमें मेहनत करते हुए पाती है और हम बिना जीवन की रोटी के हैं। हमारा नाश होने जा रहा है। आओ हममें से जो मसीह हैं, उस घर की, जिस में ऐसी संपत्ति है जो कोई नहीं छीन सकता उसे अधिक मान्यता दें।

परमेश्वर का धैर्य

डेनिस मिलर लिखता है -

पैतृक जिम्मेवारी और अपने बेटे को जिम्मेदार व्यक्ति बनाने के लिए, हमने उसे यह कहा कि जब भी वह अपने मित्र के घर खेलने जाए जो कुछ ही दूरी पर रहता है, वहाँ पहुँचकर हमें घर पर फोन कर दे। जैसे-जैसे वह बड़ा होने लगा, वह भूलने लगा, खास कर जब उसका भरोसा अपनी काबलीयत पर बढ़ने लगा कि वह बिना किसी खतरे के वहाँ पहुँच सकता है।

पहली बार जब वह भूला तो मैंने स्वंय वहाँ टेलीफोन करके पक्का किया कि वह वहाँ पहुँच गया है। हमने उसे बताया कि यदि अगली बार वह फोन करना भूल गया तो उसे उसी समय वापस घर पर आना पड़ेगा। कुछ दिनों के बाद दुबारा टेलीफोन शांत था, और मैं जानता था कि यदि उसे सीखना है तो दण्ड की आवश्यकता है। लेकिन मैं उसे दण्ड नहीं देना चाहता था। मैं टेलीफोन के पास गया, इस बात का अफसोस करते कि वह अपने पिता से सम्पर्क न करने के कारण अपना खेलने का समय खो बैठेगा।

जैसे ही मैंने नम्बर घुमाया, मैंने बुद्धि के लिए प्रार्थना की। 'उसके साथ वैसा ही व्यवहार कर जैसा मैं तेरे साथ करता हूँ।', ऐसा लगा प्रभु मुझ से कह रहा है। इसके साथ जैसे ही फोन की एक घण्टी बजी मैंने लाइन काट दी। कुछ सैकंड के बाद हमारे फोन की घण्टी बजी और वह मेरा बेटा था, 'पिताजी, मैं यहाँ हूँ।'

'किस कारण से तुमने फोन करने में देर कर दी? ' मैंने पूछा।

'हमने खेलना चालू कर दिया और मैं भूल गया। लेकिन पिताजी मैंने फोन की एक घण्टी सुनी और तब मुझे याद आया।'

'मुझे खुशी है कि तुम्हें याद आया', मैंने कहा,' चलो खुशी से खेलो।'

कितनी बार हम परमेश्वर के विषय में ऐसा सोचते हैं कि वह हमें दण्ड देना चाहता है जब भी हम उससे भटकते हैं? मैं इस बात को सोचकर अचंभा करता हूँ कि कितनी बार वह एक बार घण्टी बजाता होगा कि हम घर फोन करें।

- चुना गया।

सच्ची प्रार्थना.....
.... पृष्ठ संख्या १ से

स्वीकार की गई थी। जब यरूशलेम के नाश की भविष्यवाणी पूरी हुई, यिर्मयाह मे विलाप किया। राजा और राजकुमार इतने घमंडी थे कि वे सत्य को सुनने को तैयार नहीं थे। घमंड जो हमें अपने पाप को स्वीकारने से रोकता है, वह भयानक है। हृदय परिवर्तन के समय यह घमंड हमसे दूर होने लगता है। लेकिन यह बिलकुल नष्ट नहीं होता। बार-बार वह अपना सिर उठाता है। जब घमंड हमसे बिलकुल दूर हो जाता है, परमेश्वर का अनुग्रह बहुतायत से हमारे अन्दर काम करने लगता है।

सच्ची प्रार्थना का अभ्यास अत्याधिक प्रभावोत्पादक है। यह तुम्हारे रोम-रोम में बस जाता है। एक अच्छी प्रार्थना को सुनना आशिष की बात है। पाप के द्वारा हमारे विचार दूषित हो जाते हैं और हमारी विचारधारा परमेश्वर की विरोधी बन जाती है। एज्रा(६:१०)'कि वे स्वर्ग के परमेश्वर के लिए ग्रहणयोग्य बलिदान चढ़ा सकें और राजा तथा उसकी सम्तान की दीर्घायु के लिए प्रार्थना किया करें।'

फिरौन ने भी मूसा से आशिष के लिए प्रार्थना करने की विनती की थी। यह कैसे संभव था? बिना आज्ञापालन के आशिष पाना संभव नहीं है। परमेश्वर ऐसा करें कि हम उसके वचन का पालन कर सकें। दूसरों को बचाने के लिए हमें प्रार्थना में गहरे गोता लगाना सिखना चाहिए।

परमेश्वर ने हमें बहुत आशिष दी है। यह परमेश्वर का स्वभाव है कि हमसे प्रेम करे और हमें अपनी आशिष दे। उसके वचन को तोड़ कर हम अपने को खतरे में डालते हैं। विलापगीत(५:७)' अतः प्रभु यहोवा
यों कहता है, 'तुम्हारे यहां, चारों ओर की जातियों की अपेक्षा अधिक हुल्लड़ है और तुम मेरी विधियों पर न चले, और न तुमने मेरे नियमों का पालन किया और न अपने चारों ओर की जातियों के नियमों का पालन किया।' आओ हम अपने को प्रार्थना में लगाएँ। प्रार्थना कभी व्यर्थ नहीं जाएगी। क्योंकि यह अतिआवश्यक है कि हम अपने पाप को स्वीकार करें इस लिए अपने लोगों को प्यार सहित परमेश्वर का सत्य वचन बताना चाहिए। आओ हम परमेश्वर के सम्मुख यह मानें कि हम फलहीन और बलहीनता का जीवन बिता रहे हैं।

नबी वह है जिसके वचन और हृदय परमेश्वर के हृदय से सामंजस्य स्थापित किए है। परमेश्वर ऐसा होने दे कि हम यीशु के साथ ऐसे एक मन और विचार के हो जाएँ।

-स्वर्गीय एन दानियल।

पृष्ठ संख्या ४

कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दिजिए।